Eçæo° - §ç°oy

uÕ×ty ªçuÌlNÿ oeuHNÿç

‘‘आंतर भारती’’ स्वप्नद्रष्टा
साने गुरुजी

संस्थाध्यक्ष
ॲड.आनंदमोहन माथुर

प्रेरक, संवर्द्धक-संपादक
स्व.यदुनाथ थत्ते

Ÿee‡ Ïeeeç{tCENÿç®ç|Â®
Eçæo° §ç°oy
ÌçŒz Tì»\yªçT|,
Eç{°çt AÕç\çŒy - 413522 (ªÕç.)
ईमेल- antarbharati.patrika@gmail.com

Ïeeeç{tCENÿç®ç|Â®
द्वारा, डॉ.सी.जय शंकर बाबु
सहायक प्रोफ़ेसर, हिन्दी विभाग, पांडीच्चेरी -
विश्वविद्यालय, कालापेट, पुदुच्चेरी - 605014
ईमेल- editorbabuji@gmail.com

Eçæo° §ç°oy, ÌçŒz Tì»\y Nÿç LNÿ EÄ×E\çz Eîy ª®lÄç AlMo
Nÿy ÌwÇ®çªNÿ Gœ®çzuTOç Õzoì Ìªuœo|o, ®lÄçEçõ Nÿy ÌçGçÃ®oç,
ŸÄyœoç, Ÿzº®mç ÄuÄ¾çÌ Nzÿ GL Eç®çª Ÿtçœ Nÿ°oy Õ{.

ªìlº Ïeeeç{tNÿ
ŸçŸç®| Ìtç ÄÄ®Eç®|
09823156777

visit us : antarbharati.org.in

कार्यकारी संपादक
डॉ.सी.जयशंकर बाबु
09843508506

Ïeeeç{tNÿ
Teeç‡°Vìªçgz •[®çzuo°ç ÄÂàjNzÿ

ªçT|tŒ|Nÿ
LÌ.LŒ.ÌìEçç°ç Ä•ªìNìayt NìyÂNÿy®| •ªìÔÃÿ‡° AÕç

ÌÕ®çzTy
ª‡iEyEç®| •Tçzœ Ìîœeì°z

सभी छायाचित्र - नरेंद्र भाई

ŸNÿçuAo Ìçªª®y Ìz ŸNÿçAŒ/Ïeeeç{tNÿ ÌÕªo Õçzœç Lzìç Eªç¤

ANTAR BHARATI : A dream of Sane Guruji committed to the constructive utilization of boundless Youth Power, gives new dimensions to the Potentiality, Skill, Inspiration & Belief of the youth.

Eçæo° §ç°oy (ªçuÌlNÿ) oeuHNÿç ªìiNÿ, ŸNÿçAlNÿ ÌtçuÄ®Eç®| ûçç साईग्राफिक्स, Âçœì° Ìz TmzAEç}Ì®Ìb, GcTy°Õzoì ªìuœoNÿ° Eçæo° §ç°oy ÏeNÿiÂ, Eç{°çt AÕç\çŒy Ìz ŸNÿçuAo.

इस अंक में...

संपादकीय -	शिक्षा और शिक्षण माध्यम के दायरे व मायने	५
आंतर भारती - १	तुका म्हणे	७
आंतर भारती - २	बसव वचन	८
आंतर भारती - ३	तिरुवल्लुवर वाणी	९
काव्य भारती - १	पर्यटन केंद्र एवं तीर्थस्थल	१०
काव्य भारती - २	ग़ज़ल	११
कथा भारती - १	संघर्ष और सफलता की गाथा बराक ओबामा	१२
विशेष आलेख - १	जी.एम.फसल : बहस को अंतहीन न बनाएं	१४
विशेष आलेख - २	अवैध खनन : हमने सब कुछ जलते देखा	१६
चिंतन भारती - २	क्या किसी भी भाषा को राष्ट्रभाषा बनाया जा सकता है ?	२०
चिंतन भारती - ३	दिल्ली -मुंबई इंडस्ट्रियल कॉरिडॉर कितना? किसका लाभ?किसकी?कितनी हानि?	२३
श्रद्धांजलि -	विवेक जागरण के तीर्थयात्री : डॉ.दाभोलकर	२५
पत्र भारती-१		२७
समाचार भारती-१	कथाकथन प्रबोधन का सहस्रपूर्ती समारोह सम्पन्न	२८
समाचार भारती-२	आंतर भारती, गोवा युनिट के सुरज नाईकजी अध्यक्ष	३०
समाचार भारती-३	गोइन्का पुरस्कार व सम्मान समारोह हैदराबाद में सम्पन्न	३१
समाचार भारती-४	साहस शैक्षणिक यात्रा का आयोजन सम्पन्न अतिथि डॉ.वर्मा दम्पत्ति	३२

संपादकीय...

शिक्षा और शिक्षण माध्यम के दायरे व मायने

उन्मुक्त चिंतन से लोक सेवा के लिए तत्परता, निष्ठा, कर्मठतापूर्ण व्यवहार से प्राणिकोटि का हित चाहनेवाली मानवीय भावनाओं के उत्प्रेरक ज्ञानयज्ञ को 'शिक्षा' मानना उचित है. शिक्षा औपचारिक हो या अनौपचारिक, जिस किस को हम 'शिक्षित' कहेंगे, जरूरी नहीं कि उसने विद्यालय में औपचारिक शिक्षा हासिल की हो, मगर उससे यह अपेक्षा जरूर की जानी चाहिए कि वह ऐसा व्यवहार करेगा जिससे कि समाज की भलाई हो, मानवता का हित हो. आज सरकारी की कई योजनाओं के तहत रोटी, कपड़ा, मकान की समस्या से मुक्त कई लोग. (जो गरीब कहलाएं या अमीर भी क्यों न हो) आए दिन अनुशासनहीन व समाजकंटक बनते हुए अखबारों के आवरण पृष्ठों पर सचित्र खबर के अधिकारी बन रहे हैं. किसी अच्छे कार्य से अखबारों की ऐसी शोभा बढ़ाते तो कोई बात नहीं, मगर समाज विरोधी तत्वों के रूप में पनपते हुए समाज का अहित करनेवाले ऐसे लोगों से भावी पीढ़ी को क्या सीख मिल सकती है ? इसके लिए क्या हमारी शिक्षा व्यवस्था से कोई समाधान मिल सकता है ?

औपचारिक शिक्षण के लिए निर्धारित पाठ्यक्रम और कालावधि होती ही है, जबकि अनौपचारिक शिक्षा तो अनवरत है जन्म से मृत्यु तक शिक्षित होते रहने का मौका सहज ही मिल जाता है. विभिन्न स्तरों पर शिक्षण संस्थाओं में पाठ्यक्रम के बहाने जो कुछ शिक्षा दी जा रही है वह ज्ञान के अथाह भंडार से विभिन्न शाखाओं के ज्ञान के रूप में परोसा जा रहा है. इस ज्ञान के आदान-प्रदान की प्रक्रिया में दृश्य एवं अदृश्य समूचे जगत की काल्पनिक, अकाल्पनिक सीमाओं तक के विस्तार के साथ परंपरा, वर्तमान और भविष्य की हमारी तमाम चिंताओं और चिंतन के आदान-प्रदान ज्ञान-विज्ञान के विषयों के रूप मे ंहमारे पाठ्यक्रम में ज्ञान का विभिन्न शाखाओं के रूप में अध्ययन के विषयों के रूप में पढ़े व पढ़ाए जा रहे हैं. इस शिक्षा और शिक्षण प्रक्रिया का मूल या बुनियादी उद्देश्य को लेकर सदियों से कई चिंतन के निष्कर्ष प्रकट हुए हैं. उनका सारतत्व यही हो सकता है इस विराट सृष्टि में समूची प्रकृति के संरक्षण के साथ-साथ इन्सानियत पनपे और प्राणि जगत के सह अस्तित्व की सार्थक भावना के विकास के साथ शांतिमय एवं सुरक्षित जगत कायम रहे. इस दिशा में योग देने

में सार्थक मनुष्यों को 'शिक्षित' कहना उचित होगा.

शिक्षा व शिक्षण माध्यम के चिंतन व चिंता से दूर कहीं शिक्षा का एक बड़ा व्यापारिक रूप आज सामने आ रहा है. आज़ाद भारत की शिक्षा नीति में माध्यम की चिंता का सही समाधान देने का आरंभिक वैचारिक प्रयास लिखित रूप में संविधान में हुआ है, तत्पश्चात शिक्षा समितियों, आयोगों की सिफारिशों में कहीं शिक्षा माध्यम की चर्चा भी नज़र आती है. मगर आज उच्चतर शिक्षा के माध्यम के रूप में अंग्रजी ही 'पटरानी बनकर नाच रही है. भारत में उच्चतर शिक्षा प्राप्त करनेवाले अधिकांश नागरिक पुनः इसी देश ओर समाज में ही पनप रहे हैं और यही रोज़गार या अन्य सेवा-कार्यों से जुड़ रहे हैं. बहुभाषाई भारतीय परिवेश में उच्चतर शिक्षा के लिए माध्यम के रुप में कई सक्षम विकसित भारतीय भाषाएं हैं, मगर इनको अपनाने में बड़ी उपेक्षा जारी है. इसका ही एक परिणाम यह भी हो सकता है कि उच्चतर शिक्षा नामांकन अनुपात में कोई बड़ी वृद्धि दर्ज नहीं हो पा रही है. बड़ी संख्या में सरकारी और निजी विश्वविद्यालयों की स्थापना के बाद भी इस अनुपात में निर्धारित लक्ष में नामांकन दर्ज नहीं हो पाने का एक कारण भाषा की समस्या भी है. यदि प्रचलित और विकसित भारतीय भाषा माध्यम से उच्चतर शिक्षा के प्रसार के लिए प्रयास होगा तो निश्चयय इस दिशा में उल्लेखनीय प्रगति संभव है. शिक्षा नीति के निर्धारकों द्वारा इस ओर ध्यान दिया जाए तो जरूर ही शिक्षकों का अधिकाधिक लाभ बड़ी संख्या में जिज्ञासु छात्र उठाएंगे. सार्थक शिक्षित समाज के विकास में कहीं हमारी सांस्कृतिक एवं भाषाई पंरपरा का योग किसी हद तक हो सकता है. हर साल सितंबर १४ को राजभाषा 'हिंदी दिवस' के रूप में तथा ५ सितंबर को 'शिक्षक दिवस' के मनाने की सार्थकता तभी बढ़ सकती है, जबकि हम भारतीय भाषाओं को उच्चतर शिक्षा के माध्यम के रूप में अपनाकर शिक्षकों की सेवाएँ देश के अधिकांश जिज्ञासु छात्रों को उपलब्ध कराएंगे व बिगड़ते समाज में मानवीयता के उच्च आदर्शों के पनपने की दिशा मे ंसमाज के रूपायन के माध्यम के रूप में शिक्षा का विकास एवं प्रसार शिक्षा व शिक्षण माध्यमों के दायरों के विचार व विकास हो और शिक्षा सही मायने में समाज में मानवीयता पनपाने में योग दे, यही सबकी आशा आकांक्षा साबित हो.

शिक्षक दिवस, गणेश चतुर्थी तथा हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाओं सहित...

- सी.जयशंकर बाबु

तुकाम्हणे

लहानपण देगा देवा

(मराठी)

लहानपन दे गा देवा । मुंगी साखरेचा रवा ॥ध्रु॥
ऐरावत रत्न थोर । तया अंकुशाचा मार ॥१॥
ज्याचे अंगी मोठेपण । तया यातना कठीण ॥२॥
तुका म्हणे जाण । व्हावें लहनाहुनि लहान ॥३॥

'चींटी सक्कर लै चली'

हिन्दी भावानुवाद :

छोटी ही रहने दो भगवन्, नहीं चाहिये मुझे बड़प्पन ।
चींटी खा लेती है शक्कर, कारण है उसका छोटापन ॥१॥
ऐरावत कितना विशाल है, किन्तु मार खाता अंकुश की ॥२॥
जिसके पास होता है बडप्पन, सहे यातना वह निश्चय ही ॥३॥
तुका कहे तू सोच-समझ ले, छोटे से भी छोटा हो ले ।
चींटीं बन, तो खाँड मिलेगी, हाथी बन तो मार मिलेगी ॥४॥

हिन्दी : प्राचार्य वेदकुमार वेदालंकार
परिमल २८/८१, विद्यानगर, उस्मानाबाद (महा.).

English Translation

O ! God, make me as small as an ant

Lahaanapana degaa deva

Oh God, make me as small as the ant,
Which is happy with just sugar and Soji[1].
The elephant is adorned with garlands of gems
And also puts up with the sharp stings from the mahout.
One who is great has to put up with a lot of suffering.
Says TUKA, become as small as small can be
And make that the golden rule in life.

1. soji - roughly ground wheat flour (smolina)

English : D.S.VAJRAM
3, Praram, Lakaki Rasta, Pune - 411016

बसव वचन

मूल कन्नड वचन -
जंबू द्वीपद नव खंड पृथ्वियोळगे
यरडाळिन भाषेय केळिरय्य
कोलुवेनेंब भाषे देवनुदु
गेलुवेनेंब भाषे भक्तनदु
सत्यवेंब कूरलगने कळिदु कोंडु
सद्भक्तरु गेद्दरू काणा कूडलसंगमदेव

हिंदी काव्यानुवाद :-

जंबू द्वीप नामक नौ खण्ड पृथ्वी पर
दो जनों की भाषा सुनिए जी
मारूंगा की, भाषा ईश्वर की
विजयी हूँगा की, भाषा भक्त की
आखिर सत्यरुपी खड्गसे नष्ट होकर
सद्भक्त, ईश्वर में एक होकर
विजयी हो गये देखो कूडल संगमदेव

भाष्य -

जंबू द्वीप नामक भारत देश में नौ भाग हैं. यहाँ ईश्वर और भक्त इन दो की भाषा सुनिए जी. ईश्वर भक्त को उसकी परीक्षा लेने हेतु कहता है, ''मैं तुम्हें मारुँगा.'' आखिर में सत्य रुपी खडग से (तलवार से) नाश हो कर भक्त ईश्वर में एक हो जाता है. और वह जीत जाता है. भक्तों की जय हो. बसवण्णाजी कहते हैं. ईश्वर से बढ़कर भक्त होता है, क्योंकि अपनी भक्ति से वह ईश्वर में विलीन होता है. उसको जीत लेता है.

- डॉ.इरेश सदाशिव स्वामी
- 'विद्या', १२, ब्रह्मचैतन्य नगर, बिजापूर रस्ता, सोलापुर - ४१३००४
०२१७-२३४२१९४, ०९३७१०९९५००

तिरुवल्लुवर वाणी

तिरुक्कुरल

तमिलमूल - संत तिरुवल्लुवर
देवनागरी लिप्यांतरण एवं हिंदी हाइकु अनुवाद -
डॉ.सी.जय शंकर बाबु

प्रथम खंड - अरत्तुपाल (धर्म खंड)
अध्याय ४. अऱन् वलियुरूत्तल (धर्म महिमा)

अऱत्तारु इदुवेन वेण्डा शिविगै
पोरुत्तानोडु ऊर्न्दान इडै । (कुरल ३७)

देखें कहार,
पालकी सवार; सो
धर्मार्थ सार ।

भावार्थ - धर्म का अर्थ व लाभ क्या है, यह न पूछे । पालकी ढोनेवाले कहार व उस पर सवार व्यक्ति को देखकर इसे समझें ।

वाऴ्नाळ् पडाअमै नन्ऱाट्रिन् अह्तोरुवन्
वाऴ्नाळ् वऴिअडैक्कङ् कल् **। (कुरल - ३८)**

धर्मी हो नित
भव-पथ रोकेगा
धर्म-शिला ही ।

भावार्थ - हर पल सत्कर्म करें यही सुधर्म जरा-मरण द्वार के आगे बनकर भव बंधन से रक्षा करेगा.

पर्यटन केंद्र एवं तीर्थस्थल

- टी.ई.एस.राघवन

माउंट आबू

जैन धर्म-गढ़ 'माउंट आबू' माना जाय ।
'आबू' की आबोहवा, शुद्ध सुखद बतलाय ।
पुरातत्व, इतिहास के महत्व यहाँ प्रतीत ।
चीड़, बांस, कचनार की संख्या अधिक प्रतीत ।
अचलेश्वर अचलगढ़ में तो है विराजमान ।
शांतिनाथ मंदिर यहाँ दर्शनीय है स्थान ॥
'गोमुख' 'गांधी वाटिका' घोषित पिकनिक स्थान ।
'टाडराक' 'कैमलराक', पर्यटकों के स्थान ॥
दर्शन करने योग्य हैं, नक्की* लूणवसीह ।
लखने लायक 'गुरुशिखर' मंदिर विमलवसीह ॥
(*नक्की नामक झील)

अहमदाबाद

अहमदाबाद शहर में डोम, बाग मीनार ।
बहुतायत में हैं 'शाह, अहमद' पुरकर्तार ॥
अहमद से निर्मित जुमा, मसजिद कलासमेत ॥
रुपमती मसजिद मध्य, शोभित नूरसमेत ॥
झूलती मीनारें हैं भूकंपन से क्षीण ।
मंदिर 'हट्टीसिंह' का अभी नहीं है क्षीण ॥
अहमदाबाद शहर तो सूती से सुसमृद्ध ।
सुवर्ण; रेशम-वस्त्र से ख्यात और सुसमृद्ध ॥
'कांकरिया झील' - समीप, हराभरा उद्यान ।
नगरस्थ 'भद्र का किला' बना ट्रेड का स्थान ॥
'लोथल' पर हडप्पा की संस्कृति सुदृश्यमान ।
मोढेरा स्थित सूर्य का मंदिर प्रकाशमान ॥

- १, हनुमंतरायन मंदिर गली,
ट्रिप्लिकेन, चेन्नई - ६००००५.

ग़ज़ल

- कृपा शंकर शर्मा 'अचूक'

मिलता हर बार प्यार पेड़ों से
जिन्दगी लो सवार पेड़ों - से

पेड़ चेतन हैं गीत गाते हैं
आती दिल में बहार पेड़ों से

कोई छू कर के देखले इनको
सेवा, सत्कार यार पेड़ों से

भोज पत्रों की जो कहानी है
वेद चारों का सार पेड़ों से

देवता, बुद्ध ध्यान करते जो
ज्ञान की तेज धार पेड़ों से

खेल से खेल खेलते रहते
खेल में जीत-हार पेड़ों से

मौन व्रत मौन साधना साधे
खुलता है ज्ञान द्वार पेड़ों से

फूल, फल और जो हवा मिलती
सब के सब है उधार पेडों से

वक्त थोड़ा ''अचूक'' है बाकी
खुद को अब ले सुधार पेड़ों से

- ३८, विजय नगर,
जयपुर - ३०२ ००८.

संघर्ष और सफलता की गाथा

बराक ओबामा

- डॉ.विद्या केशव चिटको

(गतांक से आगे...)

४ जनवरी २००५ को ओबामा की सिनेटर शपथ विधि सम्पन्न हुई. ओबामा १०९ वीं कांग्रेस के सदस्य के रूप में शपथ ग्रहण करनेवाला तीसरा श्यामवर्णीण व्यक्ति रहा.

congress परिवार के सगे संबंधी एलिनाय, हवाई, लंदन केनिया और अनेक जगहों से आए हुए उसके हितैषी सिनेट व्हिजिटर्स से गैलरी भरी हुई थी. सजे हुए डायस मंच पर दाहिना हाथ उठाकर उसने शपथ ली, ''I Vice President'' शेनी (Cheney) से छोटी मालिया ने हाथ मिलाया और सशा ने सिर्फ उनकी हथेली पर हाथ रख एक हंसी बिखेर दी. हजारों की संख्या में दर्शक यह दृश्य देख रहे थे. कैपिटल हिल ग्राउंड से लायब्रेरी ऑफ कांग्रेस में मान्यवर मेहमान आए. उस हाल में ओबामा को बधाई देने के लिए लोग उसकी प्रतीक्षा कर रहे थे. ओबामा सबसे आनंद से अत्यत प्रसन्न हो मिलकर आगे बढ़ कर सबकी शुभेच्छायें उसने स्वीकार कीं. उसके बाद उसने अपने छोटे से वक्तव्य भाषण में कहा, ''हर बच्चे को बेहतरीन भविष्य मिले, इसके लिए हम कड़ी मेहनत करेंगे और इस देश की विविधता का भरपूर आनंद उठा सकें इस रूप में देश का निर्माण करेंगे कि इन बच्चों और आपके बच्चों के विकास के लिए भी यह लायक जगह साबित हो....''

दोनों बच्चियां टुकुर टुकुर देख रही थीं. आनंद उल्लास और पिता सिनेटर होने की खुशी अनुभव कर रही थीं. विशाल जन समुदाय सभी खुशी से नाच रहे थे. छः वर्ष की मालिया ने अपने पिता के हाथ को पकड़ते हुए पूछा ''पिताजी ! क्या आप अध्यक्ष बननेवाले हैं ?''

यह एक अबोध सवाल रहा. ओबामा ने लाडली लक्ष्मी के प्रश्न का उत्तर तो नहीं दिया पर आनंद का समुद्र उसके हृदय में हिलोरे ले रहा था. उसने सिर्फ अपनी बेटी के गाल को प्यार से सहला दिया. मौन में भी बड़ी शक्ति होती है. बिना शब्दों के भी बहुत कुछ कह जाता है मौन ! ओबामा मौन हो वात्सल्य भरी दृष्टि से बच्ची को देखना बहुत कुछ कह गया पर उसे समझा कितनों ने ?

कैपिटल हिल भवन के बाहर अपने कदम आगे बढ़ाते ओबामा ने अपनी पत्नी मिशेल की ओर देखा. हाथ में हाथ डाले, दोनों के कदम आगे बढ़ रहे थे. मिशेल ने उसके हाथ पर जोर से ताली देते हुए कहा. बधाई हो श्रीमान सेनेटर जी !

ओबामा ने उतने ही जोश से पत्नी के हाथ पर ताली देते हुए कहा - बधाई सेनेटर महोदया, मिशेल की ओरवों में देखते हुए ओबामा ने अनुभव किया आनंद हर्ष, उल्लास, उत्साह, उमंग और अनंत स्वप्नों का इन्द्रधनुषी रूप...

***

अब सेनेटर ओबामा की कार्यव्यस्तता बढ़ गई थी. जून २००५ में उसने एलिनाय के Knox College में एक भाषण दिया. उसने कहा ''अमेरिका की सफ़लता आपसी सद्भाव पर निर्मित है.''

पूरे वर्ष में चालीस टाऊन हाल मीटिंग की. सभी हॉल मीटिंग में लोग भारी संख्या में उपस्थित रहे. अपनी डेमोक्रटिक पार्टी के लिए फंड इकट्ठे करने अनेक अनुभवी बड़े बूढ़े बुद्धिजीवियों और शिक्षा शास्त्री, राजनीतिज्ञ और दूसरे क्षेत्र के लोगों के साथ मिल कर संयुक्त अमरीका के प्रोग्रेस के बारे में वह चर्चा करता रहा भविष्य की योजनायें बनाता रहा.

सिनेटर के पहले वर्ष में बराक ओबामा ने विदेशों का दौर किया. रूस, इस्टर्न यूरोप, मिडिल ईस्ट ईरान इराक का.

इसी वर्ष विदेशी संबंधों की समिति पर उसका चुनाव किया गया. राष्ट्रीय महत्वाकांक्षावाले एक राजनीतिज्ञ के लिए विदेशनीति बनाने के लिए एक विशिष्ट स्थान था.

२००६ वर्ष उसका अत्यंत व्यस्त भागादौड़ी में व्यतीत हुआ. अपनी पार्टी के लिए पैसा इकट्ठा करने के लिए दिन रात वह दौड़ता रहा. अब उसका लक्ष्य केवल एक था पार्टी को मजबूत बनाना....

'The Audicity of hope' पुस्तक वह पिछले सालों से लिख रहा था. वह भी पूर्ण हुई. और सिनेटर बराक ओबामा अब अपनी पितृभूमि के दर्शन के लिए केनिया रवाना हुआ. (क्रमशः)

विशेष आलेख - १

जी.एम.फसल : बहस को अंतहीन न बनाएं

- भारत डोगरा

जी.एम. आनुवंशिक परिवतर्तित फसलों की बहस को बार-बार चर्चा में लाने के पीछे की साजिश यह है कि धीरे से इसे स्वीकार्यता प्रदान करवा दी जाए. वैश्विक तौर पर यह सिद्ध हो जाने के बाद कि इन फसलों से मनुष्य सहित पूरे पर्यावरण को खतरा है, के बावजूद इसकी स्वीकार्यता को लेकर की जा रही बहस साफ दर्शा रही है कि बहुराष्ट्रीय बीज कंपनियां अपने लाभ के लिए पूरी पृथ्वी को संकट में डालने में नहीं हिचकिचाएंगी.

बी.टी. बैंगन व बी.टी.कपास के संदर्भ में जी.एम.फसलों पर हाल ही में देश में तीखी बहस हुई. अंततः बी.टी.बैंगन पर रोक लग गई. बी.टी.कपास पर बहस अभी भी जारी है. आंध्रप्रदेश व महाराष्ट्र के विदर्भ में कपास की इस किस्म से किसानों की भारी क्षति हुई है. बी.टी.बैंगन की बहस के दौरान कुछ ऐसे मुद्दे उठे जो विशेषकर बैंगन से संबंधित थे. यह कहा गया कि भारत बैंगन के जन्म का देश है व यहां के १३४ जिले बैंगन की जैव-विविधता के लिए चर्चित हैं व इसकी ३९५१ किस्में देश में उपलब्ध हैं. जी.एम.फसल आने से बैंगन के जन्म के देश में इसकी जैव विविधता पर आघात होगा. इसी तरह बी.टी.बैंगन पर हुए अनुसंधान में कितनी गंभीर कमियां रहीं व यह इसका प्रसार करने वाली कंपनी के ही निंयत्रण में किया गया, यह भी चर्चा का विषय बना.

पर इससे आगे यह कहना जरूरी है कि जेनेटिक इंजीनियरिंग से प्राप्त जी.एम. या जी.ई.फसलों में मूल रूप से कई कमियां हैं. बी.टी.बैंगन को जो निहित स्वार्थ देश में लाना चाहते थे, वही स्वार्थ इससे कहीं अधिक महत्त्वपूर्ण अन्य जी.एम.फसलों को भी भारत में लाना चाहते हैं. इन पर ये कंपनियां व उनके सहयोगी परीक्षण कर रहे हैं. अब सवाल यह है कि क्या ऐसी हर फसल के बारे में इतना बड़ा विवाद होगा ? जैसे बी.टी.बैंगन विवाद में अरबपति कंपनियों ने गलत ढंग के परीक्षणों व प्रचार से पलड़ा अपने पक्ष में करने का कुप्रयास किया, वैसा वे पुनः करेंगी. यह भी हो सकता है कि वे साम्राज्यवादी हितों से उच्चतम स्तर पर भी अपने लिए सहयोग प्राप्त करें.

अतः हमें अब तक के उपलब्ध वैज्ञानिक अध्ययनों व विमर्श के आधार पर जी.एम.फसलों के बारेें एक व्यापक निर्णय लेना होगा. आइए देखें विश्व के कुछ विख्यात वैज्ञानिक इस बारे में क्या कहते हैं.

अनेक निष्ठावान वैज्ञानिकों ने बहुत स्पष्ट शब्दों में इस विषय पर अपने तथ्य व विचार सामने रखे हैं. जनहित के मामलों में मार्गदर्शन करने के लिए अनेक देशों के प्रतिष्ठत वैज्ञानिक एक हुए व उन्होंने एक इंडिपेंडेंट साईंस पैनल (स्वतंत्र विज्ञान मंच) का गठन किया. इस पैनल ने जी.एम.फसलों पर एक महत्त्वपूर्ण दस्तावेज तैयार किया है. इस दस्तावेज के निष्कर्ष में कहा गया है, ''जी.एम.फसलों के बारे में जिन लाभों का वायदा किया गया था वे प्राप्त नहीं हुए हैं व ये फसलें खेतों में बढ़ती समस्याएं उपस्थित कर रहीं हैं. अब इस बारे में व्यापक स्वीकृति है कि इन फसलों का प्रसार होने पर ट्रान्सजेनिक प्रदूषण से नहीं बचा जा सकता है. अतः जी.एम.फसलों व गैर जी.एम. फसलों का सह अस्तित्व नहीं हो सकता है. सबसे महत्त्वपूर्ण तथ्य यह है कि जी.एम. फसलों की सुरक्षा प्रमाणित नहीं हो सकी है. इसके विपरीत पर्याप्त प्रमाण प्राप्त हो चुके हैं जिनसे इन फसलों की सुरक्षा संबंधी गंभीर चिंताएं पुष्ट होती हैं. यदि इनकी उपेक्षा की गई तो स्वास्थ्य व पर्यावरण की जो क्षति होगी उसकी पूर्ति नहीं हो सकती है. अतएव जी.एम. फसलों को अब दृढ़ता से अस्वीकृत कर देना चाहिए.'' विश्व के इन जाने-माने वैज्ञानिकों ने विस्तृत अध्ययन के बाद जो इतना स्पष्ट निष्कर्ष दिया है. इससे अधिक स्पष्ट राय और क्या हो सकती है ?

यूनियन ऑफ कन्सर्नड साईंटिस्टस नामक वैज्ञानिकों के कुछ-समय पहले अमेरिका में कहा था कि जेनेटिक इंजीनियरिंग के उत्पादों पर फिलहाल रोक लगनी चाहिए क्योंकि यह असुरक्षित हैं. इनसे उपभोक्ताओं, किसानों व पर्यावरण के कई खतरे हैं.

भारत में बी.टी. बैंगन के संदर्भ में इस विवाद ने जोर पकड़ा तो विश्व के १७ विख्यात वैज्ञानिकों ने भारत के प्रधानमंत्री को पत्र लिखकर इस बार में नवीनतम जानकारी उपलब्ध करवाई. पत्र में कहा गया है कि जी.एम.प्रक्रिया से गुजरने वाले पौधे का जैव-रसायन बुरी तरह अस्त-व्यस्त हो जाता है जिससे उसमें नए विषैले या एलर्जी उत्पन्न करने वाले तत्त्वों का प्रवेश हो सकता है व उसके पोषण गुण कम हो सकते हैं या बदल सकते हैं. उदाहरण के लिए मक्का की जी.एम.किस्म जीएम एमओएन ८१० की तुलना गैर-जी.एम. मक्का से करें तो इस जी.एम. मक्का में ४० प्रोटीनों की उपस्थिति महत्त्वपूर्ण हद तक बदल जाती है. जीव-जंतुओं को जी.एम. खाद्य खिलाने पर आधारित अनेक अध्ययनों से जी.एम. खाद्य के गुर्दे (किडनी), यकृत (लिवर) पेट व निकट के अंगों (गट), रक्त कोशिका, रक्त जैव रसायन व प्रतिरोधक क्षमता (इम्यूनिटी सिस्टीम)पर नकारात्मक असर सामने आ चुके हैं.

(पृष्ठ १९ पर...)

विशेष आलेख - २

अवैध खनन : हमने सब कुछ जलते देखा

- चिन्मय मिश्र

''जब भारत नाम का कोई देश और उड़ीसा नाम का कोई प्रदेश नहीं था, उस समय से भी बहुत पहले से दक्षिणी उड़ीसा की चपटी चोटियों वाली, नीची पहाड़ियां डोंगरिया कोंड आदिवासियों का बसेरा रही हैं. ये पहाड़ियां कौंड आदिवासियों की और कौंड आदिवासी इनकी निगहबानी करते थे और इन्हें जीवित देवता मानकर पूजते थे. '' - अरुंधती राय

उत्तर से दक्षिण और पूरब से पश्चिम, पूरा भारत वर्ष आज सन्नाटे में है. इस सन्नाटे को कहीं डायनामाइट का धमाका, कहीं पुलिस की गोली, कहीं माओवादियों की गोली, तो कहीं खनन माफिया के गुंडों की बंदूकों से निकली गोलियां तोड़ती हैं. ये धमाके सिर्फ जमीन को खोदकर उससे खनिज निकाल लेने के लिए ही नहीं हैं बल्कि उन अनगिनत आदिवासियों की सिसकियों की आवाज़ छुपाने के लिए भी हैं, जो कि अपना घरोंदा, अपना जंगल, अपने ग्राम देवता, अपने झरने व नदियों के साथ अपने परिवार व समुदाय को विकास के नाम पर उज़ड़ते देखने को अभिशप्त हैं.

अपनी बात को थोड़े आगे ले जाते हुए अरुंधती राय कहती हैं, ''आज इन पहाडियों को बेचा जा रहा है, क्योंकि इनमें बाक्साइट है. कौंड आदिवासियों के लिए यह ऐसे ही है जैसे, देवता की बोली लगा दी गई हो. वे पूछते हैं. अगर यही देवता राम या अल्लाह या ईसामसीह होता, तो उसकी कितनी कीमत लगती ?'' ऐसा हिसाब लगा पाना तो मुश्किल है लेकिन मध्यप्रदेश में खनन कार्य करने वाले दो व्यापारियों के घरों पर आयकर विभाग द्वारा छापा मारे जाने के बाद उनके घरों, दफ्तरों, दोस्तों, कर्मचारियों के यहां से बरामद सैकड़ों करोड़ों करोड़ की सम्मत्ति बता रही है कि बेल्लरी का विस्तार पूरे देश में हो चुका है और इसमें तकरीबन सभी राजनीतिक विचारधाराओं की खुली सहमति है. वरना क्या ऐसा सीव था कि पिछले ७ वर्षों में सम्पत्तियों को सैकड़ों गुना बढ़ा लेने के बावजूद, उन पर किसी तरह की कोई आंच नहीं आई और यदि किसी विरोधी दल के राजनीतिज्ञ ने इस संबंध में मुंह खोला तो उसे दल के 'जिम्मेदार' पद

से हटा दिया गया?

दरअसल अवैध खनन को लेकर भ्रष्टाचार जैसा शब्द अब नाकाफी लगने लगा है. क्या हो सकता है नया शब्द ? समरेन्द्र दास और फीलिक्स पैडल ने अपनी पुस्तक 'आउट ऑफ दिस अर्थ : ईस्ट इंण्डिया आदिवासीज एण्ड दि एल्यूमिनियम कार्टेल' में सिर्फ उड़ीसा में बाक्साइट का मूल्य २.२७ खरब डालर बताया है जो कि भारत के सकल घरेलू उत्पाद से दोगुना है. यह मूल्यांकन सन् २००४ की कीमतों के आधार पर है और अब कीमतें दुगनी हो चुकी हैं. गौरतलब है कि एक खरब की गणना के लिए कुल बारह शून्य का सहारा लेना पड़ता है. देश के एक हिस्से में पाए जाने वाले किसी एक खनिज के मूल्य से अंदाजा लगाया जा सकता है हमारे पास कितनी राष्ट्र.ीय सम्पत्ति है लेकिन हम इसे नगण्य सी रायल्टी पर निजी हाथों को बेच रहे हैं और लालच की सीमा का अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि खनि का दोहन करनेवाले इस न्यूनतम रायल्टी का भी भुगतान नहीं करना चाहते.

मध्यप्रदेश में पड़े आयकर छापों के बाद भाजपा प्रदेश अध्यक्ष की टिप्पणी थी कि क्या भाजपा से जुड़े लोगों को ही व्यापार खासकर खनन व्यापर करना चाहिए. कर्नाटक, आंध्रप्रदेश, छत्तीसगढ़, झारखंड और अब मध्यप्रदेश ने स्पष्ट बता दिया है कि यह राजनीतिज्ञों का विशेषाधिकार है और वे उनकी हैसियत का अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि वे सिर्फ जमानत पाने के लिए किसी मजिस्ट्रेट को पांच करोड़ रुपए की रिशवत दे सकते हैं. मध्यप्रदेश में जिन दो व्यक्तियों पर छापे पड़े उनमें से एक राज्य वित्त निगम के 'डिफाल्टर' हैं और दूसरे महज ७ वर्ष पूर्व तकनीकी शिक्षक थे. आज सड़क निर्माण से लेकर अस्पताल और मीडिया व्यवसाय (?) तक में इनकी गहरी पैठ है. क्या यह महज संयोग है कि मध्यप्रदेश सरकार सरकारी चिकित्सा महाविद्यालयों और अस्पतलों को निजी हाथों में सौपने को तत्पर है ? भोपाल के सरकारी चिकित्सा महाविद्यालय एवं एक निजी चिकित्सा महाविद्यालय जिसके तार छापे की गिरफ्त में आए व्यापारी से भी जुड़े हैं, के बीच सझौते की बात सामने आई है. वैसे यह विषयांतर सा प्रतीत होता है लेकिन विचारणीय बात यह है कि खनन के अवैध व्यापार से कमाए हुए धन का उपयोग अंततः इसी तरह से सेवाओं को हथियाने में हो रहा है.

इस पूरे मामले में प्रशासन की भूमिका और मनःस्थिति भी कम खतरनाक नहीं है. अरुंधती राय एवं मेधा पाटकर जैसे विचारवान एवं प्रतिबद्ध व्यक्तियों ने जब आगे आकर इन विसंगतियों को उभारा तो उनके खिलाफ न केवल वातावरण बनाया गया बल्कि अनर्गल आरोप लगाए गए. प्रशांत भूषण को तो खैर राष्ट्रद्रोही का ही तमगा दे दिया गया. इसे एक उदाहरण से समझते हैं. विश्वरंजन भारतीय पुलिस सेवा के अधिकारी होकर छत्तीसगढ़ के पुलिस महानिदेशक भी रहे हैं. वे प्रगतिशील कवि भी हैं और अनेक सम्मेलनों में सम्मानित भी हो चुके हैं. उनकी कविता की इन पंक्तियों पर गौर करिए -

''पर शहर और बाज़ार तो
बढ़ता ही जा रहा है रोज़
जहां मेधा और अरुंधती जैसे लोग
पैसा उगाहते हैं
हमें संगठित करने के लिए और
पांच सितारे वाले होटल के लाबी में
आयोजित करते हैं
अन्तर्राष्ट्रीय पत्रकार सम्मेलन''

आज से करीब बारह वर्ष पूर्व सदी के आगाज यानि वर्ष २००० में यह कविता प्रकाशित हुई थी, जिसमें यह भी कहा गया कि शहर को प्रदूषण से बचाने नग्नता में आदिम सौंदर्य देखने और झूमने जैसी इच्छाओं की पूर्ति के लिए ये लोग आदिवासियों के लिए संघर्षरत हैं. अफसोस इस बात का है कि सर्वाधिक प्रतिष्ठित कही जाने वाली साहित्यिक पत्रिकाओं में से एक ने इस कविता को प्रकाशित किया था.

दरअसल विश्वरंजन उस व्यवस्था का एक प्रतीक भर हैं, जो कि किसी ताकतवर के सपनों को साकार करने के लिए निशक्त के सपनों को चकनाचूर करने का माध्यम बनती है. भारत में आधुनिक विकास के नाम पर होने वाला शोषण स्पेन, ब्रिटन, पुर्तगाल, फ्रांस, इटली जैसे युरोपीय देशों द्वारा एशिया, अफ्रीका और लेटिन अमेरिका में उपनिवेश के माध्यम से किए गए शोषण को भी पीछे छोड रहा है. जबकि भारतीय संविधान में अपने नागरिकों एवं प्राकृतिक

संसाधनों को बचाने के स्पष्ट निर्देश दिए गए हैं. बार-बार अनुरोध किए जाने के बावजूद राज्यपाल पांचवी अनुसूची के अंतर्गत उन्हें प्रदत्त अधिकारों का प्रयोग करने का मन नहीं बना पा रहे हैं. वहीं राज्य के नीति निदेशक तत्व भाग - ४ (४६) में लिखा है ''राज्य, जनता के दुर्बल वर्गों के, विशिष्टतया, अनुसूचित जातियों और अनुसूचित जनजातियों के शिक्षा और अर्थ संबंधी हितों की विशेष सावधानी से अभिवृद्धि करेगा और सामाजिक अन्याय और सभी प्रकार जनजातियों के शिक्षा और अर्थ संबंधी हितों की विशेष सावधानी से अभिवृद्धि करेगा और सामाजिक अन्याय और सभी प्रकार के शोषण से उनकी सुरक्षा करेगा.''

मगर हमने हर अन्याय को आर्थिक लाभ हानि से जोड़ लिया. अवैध खनन से होनेवाले नुकसान का मात्र आर्थिक आकलन हास्यापद ही है. अब समय आ गया है कि, अवैध खनन के सामाजिक सांस्कृतिक व पर्यावरणीय प्रभावों पर अधिक गंभीरता से विचार होना जरूरी है. जनार्दन रेड्डी और सुधीर शर्मा जैसे अन्य अनेक खनन प्रेमियों को रोकने के लिए आवश्यक है कि खनन की सीमा तय की जाए और इसका पूर्ण राष्ट्रीयकरण किया जाए. वैसे एक प्रामाणिक प्रगतिशील कवि भगवत रावत ने लिखा है.

''हमने चलती चक्की देखी
हमने सबकुछ पिसते देखा
हमने चूल्हे बुझते देखे
हमने सबकुछ जलते देखा.'' ❑

(पृष्ठ १५ से...)

वैज्ञानिकों ने कहा है कि जिन जीवजंतुओं को बीटी मका खिलाया गया उनमें प्रत्यक्ष विषैलेपन का प्रभाव देखा गया. बी.टी.मक्का पर मानसैंटो ने अपने अनुसंधान का जब पुनर्मूल्यांकन किया तो अल्प-कालीन अध्ययन में ही नकारात्मक स्वास्थ्य परिणाम दिखाई दिए. बी.टी.के विषैलेपन से एलर्जी व रिएक्शन का खतरा जुड़ा है.

अब तब उपलब्ध सभी तथ्यों के आधार पर यह मजबूती से कहा जा सकता है कि सभी जी.एम.फसलों पर पूरी तरह रोक लगनी चाहिए. इनके परीक्षणों पर भी इस हद तक रोक लगनी चाहिए ताकि इनसे जेनेटिक प्रदूषण फैलने की कोई संभावना न रहे. देश की कृषि, स्वास्थ्य व पर्यावरण की रक्षा के लिए यह नीतिगत निर्णय लेना जरूरी है. ❑

क्या किसी भी भाषा को राष्ट्रभाषा बनाया जा सकता है ?

- सतीश जाधव

भाषा राष्ट्र के लिए क्यों आवश्यक है. भाषा राष्ट्र की एकता, अखंडता तथा विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है. यदि राष्ट्र को सशक्त बनना है तो एक भाषा होना चाहिए इससे धार्मिक तथा सांस्कृतिक एकता बढ़ती है. यह स्वतंत्र तथा समृद्ध राष्ट्र के लिए आवश्यक है. इसलिए प्रत्येक विकसित तथा स्वाभिमानी देश की अपनी एक भाषा अवश्य होती है. जिसे राष्ट्रभाषा का गौरव प्राप्त होता है. राष्ट्रभाषा संपूर्ण देश में भावात्मक तथा सांस्कृतिक एकता स्थापित करने का प्रधान साधन होती है. इसे बोलनेवालों की संख्या अधिक होती है. हमारी राष्ट्रभाषा हिंदी भारत के प्रमुख राज्य जैसे मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश, बिहार, राजस्थान, हरियाणा तथा हिमाचल प्रदेश में प्रमुख रूप से बोली जाती है.

हम सभी इस बात को मानते हैं कि, हिंदी भाषा बोलने में, लिखने में, पढने में सरल है. अब प्रश्न यह उठता है कि, क्यों हिंदी का विरोध होता रहा है. आज़ादी दिलाने में जिस भाषा ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई वह भाषा हाशिए पर ही रह रही है. उसे फुटपाथ पर गुजर-बसर करना पड़ रहा है जबकि अंग्रेजी वाले तीन, चार, पाँच सितारों वाली होटलों में ऐश कर रहे हैं.

यदि आप कश्मीर से कन्याकुमारी और कच्छ से कोलकत्ता (उत्तर-पूर्व भी शामिल) तक देखें तो क्षेत्रीय भाषाओं के प्रभाववाली टूटी-फूटी ही सही पर सब को हिंदी आती है. यानी हिंदी भारत के कोने-कोने में रच-बस गई है. यदि कोई कहता है कि, दक्षिणवाले हिंदी का विरोध करते हैं तो इसके बारे में भ्रांति ही ज्यादा है. वहाँ उतना हिंदी विरोध नहीं है जितना सोचा जाता है. 'आवारा' से लेकर 'तलाश' तक तमाम हिंदी फिल्में दक्षिण भारत में रिलीज हुई हैं. सराही गई है. दक्षिण भारतीयों के हिंदी ज्ञान के लिए और क्या सबूत चाहिए ? वास्तव में दक्षिण भारतियों के हिंदी ज्ञान के लिए और क्या सबूत चाहिए ? वास्तव में,

दक्षिण भारत में हिंदी मुख्य भाषा के रूप में तो नहीं, पर पूरक भाषा के रूप में संवाद का माध्यम बन चुकी है.

हिंदी भाषा भारत के कोने-कोने में फैली है. इतना ही नही बल्कि वह विश्व में सबसे ज्यादा बोली जानेवाली तीसरी भाषा हैं. विश्व में ५०० से ६०० मिलियन लोग हिंदी भाषी हैं. आज कई विदेशी छात्र हमारे देश में हिंदी और संस्कृत भाषाएँ सीखने आ रहे है. विदेशी छात्रों के इस झुकाव की वजह से देश के कई विश्वविद्यालय इन छात्रों को हमारे देश की संस्कृति और भाषा ज्ञानार्जन के लिए सुविधाएँ प्राप्त करवा रहे हैं. साथ ही विश्व के १२१ देशों में हिंदी अध्ययन-अध्यापन एवं संशोधन का कार्य करवा रहे है. विश्व में हिंदी भाषा की लोकप्रियता यही खत्म नहीं होती. विश्व का पहला सम्मेलन नागपूर में सन १९७५ में हुआ था. इसके बाद यह सम्मेलन विश्व में बहुत से स्थानों पर रखा गया. दूसरा सम्मेलन मॉरशिस में सन १९७६ में, तीसरा सम्मेलन भारत में सन १९८३ में, चौथा सम्मेलन ट्रिनिडाड और टोबॅगो में सन १९९६ में पाँचवा सम्मेलन यूके में सन १९९९ में, छठ्ठा सम्मेलन सूरीनाम में २००३ में और सातवाँ सम्मेलन अमेरिका में सन २००७ में

* हिंदी भाषा से जुडे कुछ रोचक तथ्य :

- आपको यह जानकर भी आश्चर्य होगा कि हिंदी भाषा के इतिहासपर पहले साहित्य की रचना 'ग्रासिन द तैसी' एक फ्रांसीसी लेखक ने की थी.

- हिंदी भाषा पर पहला सर्वेक्षण सर जॉर्ज अब्राहम ग्रीयर्सन (जो कि एक अंग्रेज है) ने किया.

- हिंदी भाषा पर पहला शोधकार्य 'द थिओलॉजी ऑफ तुलसीदास' को लंदन विश्वविद्यालय में पहली बार एक अंग्रेज विद्वान जे.आर.कार्पेटर ने प्रस्तुत किया था.

इससे हिंदी का महत्व एवं उसके विस्तार का परिचय मिलता है. जो एक राष्ट्रभाषा के लिए बहुत मायने रखता है.

हिंदी भाषा आज अध्ययन-अध्यापन तक ही सीमित नहीं है वह तो संशोधन, उन्नत तकनीक एवं व्यावसायिकता की समर्थ भाषा बन चुकी है. उसके सुखद

परिणाम हमें भारत सरकार के विभिन्न मंत्रालयों के अधीन विभिन्न विभागों, उपक्रमों, बँकों के कामकाज में देखने को मिल रहे हैं. यहाँ तक की बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ भी हिंदी की व्यावसायिक शक्ति को पहचान चुकी हैं और यथेष्ट रूप में हिंदी को अपना रही हैं.

आज हिंदी राजनीति में भी पीछे नहीं है. भारतीय राजनीतियों की भाषा के सवाल पर श्रीमती सोनिया गांधी की राजभाषा संबंधी पक्ष की विवेचना करते हुए राम रघुनाथ चौधरी कहते हैं कि, इससे बड़ा उदाहरण और कौन-सा हो सकता है कि, इतने कम समय में इतनी अच्छी हिंदी लिख-पढ़कर सोनिया गांधी देश की जनता को जनता की भाषा (हिंदी में) में संवाद कर रही हैं. इसे वे एक अनुकरणीय मार्ग बताते हुए अंग्रेजी मानसिकता से ग्रस्त नौकरशाही लोगों को अपने शब्दों में टोकते हैं और प्रेरणा लेकर आगे इसी मार्ग पर बढ़ने की सलाह देते हैं कि, आती है हिंदी जुबान आते आते.

कल तक हिंदी राष्ट्रीय भावनात्मक एकता व स्वतंत्रता आंदोलन की वाणी थी. आज हिंदी इस राष्ट्र की राष्ट्र भाषा व संविधान सम्मत राजभाषा के साथ-साथ वाणिज्य व्यापार, मीडिया, विज्ञापन आदि की सशक्त भाषा है और कल निश्चित रूप से हिंदी सूचना प्रौद्योगिकी की सबसे शक्तिशाली भाषा के रूप में उभरेगी और विश्वभर पर हिंदी का ही बोल बाला होगा.

कुछ ही दिनों में हिंदी दिवस आनेवाला है. हिंदी दिवस हमारी एकता की कड़ी को अधिक मजबूत बनाये इसलिए जो आज हमारी विविधता है और विविधात्मक संस्कृति है उसके बीच की एकता को मजबूत करने की दिशा में हिंदी स्वयं एक महत्वपूर्ण भाषा कड़ी है. तो इस हिंदी दिवस के अवसर पर हिंदी पर चर्चा न करते हुए काम करें वे भी एक दिन नहीं साल के पूरे दिन काम करें. यही हमारे देश की अंखडता की भाषा है.

सतीश जाधव (पी.जी.टी.हिंदी)
जवाहर नवोदय विद्यालय
कागल, जि.कोल्हापुर
भ्रमणध्वनि - ९८२३५८४२७९

चिंतन भारती - ३

दिल्ली -मुंबई इंडस्ट्रियल कॉरिडॉर कितना?किसका लाभ?किसकी?कितनी हानि?

- मेधा पाटकर

देश का कोई भी नागरिक और नागरी समूह, समाज का हर गट, यह विकास के मार्ग से ही जाना चाह रहा होगा तो भी 'विकास' की संकल्पना और सपने अनेक प्रकार के होते हैं. उसे पूरा करने के लिए भागदौड़ करनेवालों में विवाद उत्पन्न होते हैं वे इसीलिए. आज भारतभर विकास के नामपर सत्ताधीश सरकार की आयोजित बहुत बडे- या कि बडे डरावनेही कहना होगा- ऐसी योजनाओंपर प्रश्न खड़े करके, जोरदार संघर्ष शुरु हुआ है, वह इसीलिए. पिछले कुछ सालों में - शदकों में विकास यह शब्द राजनीति के चुनाव अभियान के लिए सांकेतिक शब्द बना दिया है, विकास योजना कहकर जनतंत्र की मर्यादाओंका थोड़ा भी पालन न करते हुए जिन परिवर्तनोंको थोपा जा रहा है, उसमें से काफि परिवर्तन यह जनसाधारण लोगोंकी जान लेने पर आमादा होते हैं.खेती और किसानों को ध्वस्त कर रहे हैं और ग्रामीण ही क्यों शहरों की बड़ी जनसंख्याको धोखा देकर देश में आर्थिक, दरार निर्माण करते हैं. ''औद्योगीकरण'' मतलब ही विकास, यह समीकरण खेती ही नहीं बल्कि ग्रामीण क्षेत्र के गृहउद्योग, ग्रामोद्योग और लघुउद्योग को समाप्त करने के लिए जिम्मेदार होते हैं. इसका एकमात्र कारण, कौनसे प्रकार का औद्योगीकरण और कौनसी दिशा में विकास यह समीकरण खेती ही नहीं बल्कि ग्रामीण क्षेत्र के, इसके बारे में जनता के साथ विज्ञान-विनिमय, अनुमति से निर्णय और नियोजन न होते हुए, पूंजि-आधार से, रोज़गार ही समाप्त करनेवाले, अर्थव्यवस्था को बड़ी कंपनियों के हाथों में सौंपने वाले ऐसे ही उद्योगोंको आखिर किसी तरह आगे बढ़ाया जाता है.

इन्फ्रास्ट्रक्चर इस शब्द को और क्षेत्र को बहुत ही आस्थापूर्वक मान्यता दी.

शासन कर्ता इस प्रकार से अनेक परियोजनाओं को आम जनता की प्राथमिक आवश्यकताओं को और प्रमुखताओंको ध्यान में न लेते हुए, उन्हें कार्यान्वित करने का जोर पकडते हैं. इस विभाग के अंदर आनेवाली परियोजनाओं में रस्ते, बड़े-बड़े हायवेज, एक्सपप्रेसवेज, फ्लायओव्हर्स, करोड़ों-अब्जों रुपयोंका निवेश करनेवाली परियोजनाएँ तो हैं ही, लेकिन इस महामार्ग के साथ ही राजमार्ग पर चलने वाली उनके आजूबाजू के सभी निर्माण, सभी नैसर्गिक साधन संपत्ति, सभी नियोजन, विकास के ही आजतक के लाभ-पानी, बिजली इसके पहले संचार व्यवस्था आदि. इनका कब्जा लेने का अथवा ठेका लेने का चित्र नज़र नहीं आता. एक एक्सप्रेस वे अगर बन गई तो उसके लिए ज़मीन को हडपना तो १८९४ के ब्रिटिशों से चला आ रहा कानून तो उपयोग में आता ही है, लेकिन उनके आजूबाजूकी जमीन, गाँव, शहर, बस्तियाँ आदि भी बहुत ही जल्द मटिया मेट कर दी जाती हैं, इसका अनुभव वहाँ की रोज़गार देनेवाली खेती और अनेक लघु उद्योगों को वहाँ टिकने नहीं दिया जाता, आयटी हब्ससे शॉपिंग माल्स, फाईव्ह स्टार हॉटेल्स और बड़े -बड़े करोडपतियों की इस्टेटस वहाँ खड़ी की जाती हैं. सारा चित्र ही बदल जाता है.

इस बदले हुए चित्र को विकास कहने के पहले बहुतही सोचना चाहिए. अब अधिकांश जनता की, आखिर गरीबोंसे लेकर मध्यवर्गियों तक के लोगों की समझ में आ रहा है इसका कारण इन परियोजनाओं के कारण होनेवाले खेती-जमीन से रोज़गार / उपजीविकासे, घरतक विस्थापन पीढ़ी -दर-पीढ़ी जीनेवालोंपर, उनके जीने के सभी आधारोंपर और जीवन संस्कृति पर भी आक्रमण होता रहा है. उन ताकतवर शाक्तियों से मुकाबला करना नामुमकिन होता है, स्थानीय लोग बर्बाद हो जाते हैं. उनका ना पुनर्वसन, ना नये उद्योगों में, ना रोजगारों में शामिल किया जाता है. इस प्रकार की उनकी हालत है. कुछ ठेकेदार कंपनियाँ, स्थलांतरित मजदूर और नये आये हुए धनवानोंसे पूरा कब्जाही लेकर स्थानीय सबकुछ समाप्त हो जाता है. ना सिर्फ भाषा ना सिर्फ उपजीविका लेकिन उनके हाथ के साधन और संपत्ति भी सभी खो जाने का समय आने पर लोग आंदोलन करने लगते हैं. आज केरल से लेकर आसाम तक इस प्रकार की बड़ी परियोजनाओंके मुद्दपर अथवा परियोजनाओं काही विरोध हो रहा है, वह इसीकारण.

अनुवाद : डॉ.विजया वारद - रागा

'ममता निवास', नांदेड बिदर रोड, उदगीर - ४१३५१७ (महा.)

विवेक जागरण के तीर्थयात्री : डॉ.दाभोळकर

फ्रांसिस दिब्रिटो

डॉ.नरेन्द्र दाभोळकर की निर्घृण और भययुक्त हत्या के बाद यह प्रश्न फिर से आया है कि हम भारतीय सच में सहिष्णु हैं या नहीं? परमता का हम आदर करते हैं क्या ? प्रसिद्ध विचारक फ्रांस के वाल्टेयरने तीन सौ वर्ष पूर्व कहा है कि तुम्हारा मत मुझे बिलकुल मान्य नहीं होगा, पर तुम्हे उसे अभिव्यक्त करने मिले तदर्थ मैं अपने प्राणों की बाजी लगाने तैय्यार हूँ (१६९४-१७७८). विरुद्ध मत के कारण हमें अपने मत परखने का अवसर प्राप्त होता है.

डॉ.नरेन्द्रदाभोळकर धर्मद्रोही कदापि नहीं थे. वे धर्म सुधारक थे. धर्मवृक्ष पर पोषित चिमगादडों को छांटने का उनका प्रयास था. तदर्थ उन्होंने विवेक जागरण अभियान चलाया था. मेरे मतानुसार वे विज्ञानवादी श्रद्धावान थे. अपने जीवन के ध्येय पर उनकी दृढ निष्ठा थी. उसी के लिए वे जीवनभर जिए, संघर्ष किए और उसी के लिए बलिदान दिए, यह बलिदान कभी भी व्यर्थ नहीं जाएगा. सच्ची श्रद्धा विवेक विरोधी हो ही नहीं सकती. वास्तव में श्रद्धा और विवेक यह ऐसे दो पंख हैं जिसके बलपर मनुष्य विचार जगत में सुखपूर्वक विहार कर सकता है. मध्य युगीन विचारक संत अल्बर्ट द ग्रेट (१०३३-११०९) कहा करते थे श्रद्धा, बुद्धिवाद की खोज में रहती है. विज्ञान प्रत्यक्ष प्रयोग कर निष्कर्ष निकालता है जबकि श्रद्धा अदृश्य की खोज करती है. क्षेत्र अलग होने पर भी उनमें विरोध होने का कोई कारण नहीं है.

प्रत्येक व्यक्ति को श्रद्धा करने का, अपने विवेक के अनुसार पूजा-अर्चना करने का मूलभूत अधिकार है. श्री दाभोळकर ने इसे कभी अमान्य किया नहीं. या किसी की श्रद्धा की खिल्ली नहीं उडाई. विवेक पूर्वक अपनी श्रद्धा को जांच लें, ऐसा वे नम्रतापूर्वक कहते थे. निर्दोष समीक्षा के वे आग्रही थे. डा.दाभोळकर के सभी विचार सभी को मान्य होते थे, ऐसा नहीं है, इस बात का भान उन्हें था.

वैचारिक आदान-प्रदान के कारण अनुभति के शितिज व्यापक होते जाते हैं, दुराग्रह का रुपांतर आदर के रुप में हो जाता है. सांचेबद्धता लुप्त होकर गतिशीलता आती है और परिणामतः समाजजीवन अधिक निर्दोष व निरामय होने में सहायता होती है.

तर्कशुद्ध विचार और उनकी अभिव्यक्ति का लोकविलक्षण कौशल, उसे हल्के हास्य का स्पर्श, के कारण डॉ.दाभोळकर का युक्तिवाद उनके विरोधकों को भी मंत्रमुग्ध कर देता था. अंतर्मुख कर देता था, उन विचारों को उतनी ही तीक्ष्णता से रेस्पान्स (प्रतिसाद) करना यह सच्चे शूरवीर का लक्षण है. इस प्रकार की बौद्धिक कुश्ती के लिए वे सदा तत्पर रहते थे. तदर्थ अनेकों को उन्होंने खुले निमंत्रण भी दिए थे. उन्होंने अनेक आह्वान स्वीकार किए थे. वादे वादे जायते तत्वबोधः पर उनकी अटूट श्रद्धा थी.

साक्रेटिस, क्राईस्ट, गांधी, मार्टिन लूथर किंग इत्यादि ने वैचारिक संघर्ष का नेतृत्व किया है. प्रभु क्राईस्ट ने अपने कार्यकाल की बुवाबाजी पर जोरदार हमले किए थे. मोझेस की गद्दीपर विराजमान हुए दक़ियानूसी विचारों वाले धर्ममार्तंडों को क्राईस्ट ने चुनौति दी. अपनी भूमिका का देय मूल्य मृत्यु ही है. इसकी अनुभति उन्होंने अपने शिष्यों को कराई. साक्रेटिस ने हँसते-हँसते विष का प्याला पिया था. गांधी जी अंगरक्षकों का कवच ओढे बिना ही निर्भयता से प्रार्थना सभा में जाते थे. मार्टिन लूथर किंग को अपने भविष्य की पूरी जानकारी थी. इन सभी लोगों ने अपनी मृत्यु पर विजय पा ली थी. वे मृत्युंजय थे. डॉ.दाभोळकर भी उसी श्रेणी में जा बैठे हैं. विचार कभी मरते नहीं, वे अमर होते हैं. उन्हें दबाने का प्रयत्न किया भी तो वे कभी नष्ट नहीं होते हैं. विवेक की मशाल हात में लेकर डॉ.दाभोळकर ने विचारशील लोगों की फौज तैय्यार की है. उन्होंने हाथ में ली ज्योति अखंडित जलती रहेगी इसमें कोई शंका नहीं है. डॉ.दाभोळकर की हत्या से परिवर्तन की लड़ाई का हरेक सैनिक व्यथित है. उदास है पर बिलकुल निराश नहीं. क्योंकि सत्य सदा अमर होता है और दुष्टता का कोई भविष्य नहीं होता है इसका उनके हर सैनिक को विश्वास है. सत्यमेव जयते.

(लेखक प्रतिष्ठित साहित्यकार व सामाजिक कार्यकर्ता हैं)

(दै.लोकमत से साभार) **हिन्दी प्रस्तुति : सदाविजय आर्य**

❑

पत्र-भारती १

प्रिय सर,

आपको शायद स्मरण न हो पर मुझे अच्छी तरह से याद है १९९८ में मैने अंधश्रद्धा निर्मूलन आंदोलन के बारे में दैनिक एकमत में लिखवा था. वह लेख करारा था. पर दाभोळकर सर ने प्रतिक्रिया समर्पक दी थी. एक निष्ठावान व्यक्ति के संदर्भ में ऐसा होना समाज के स्वास्थ्य के लिए घातक है.

साने गुरुजी के विचारों को शिरोधार्य मानकर काम करनेवाले दाभोळकर हमारे बीच नहीं हैं, एक प्रतिभा सम्पन्न व्यक्ति समाज ने खो दिया.

नरेन्द्र दाभोळकर की हत्या की गई. सब की ओर से निषेध व्यक्त किया गया. यह ऐसा कब तक चलनेवाला है. एक तरफ महाराष्ट्र को पुरोगामी कहते और चाहे जैसा व्यवहार करते हैं.

समाज को आत्मचिंतन करना पड़ेगा. कि ऐसी वृत्ती क्यों निर्माण हो रही है. समाज के हित के लिए लढनेवालों को अगर ऐसी दंड मिलता है तो समाज कितना जंगली अवस्था में है. हमें महसूस होगा कि दहशतवाद-नक्सलवाद आदि बातें....

पूर्वसूचना देकर की जाती हैं. पर यह पद्धति तो नई पैद हुई हैं. इस का गंभीरता से विचार करें. प्रगति आदि बातें एकतरफ रखें. इस वृत्ति की शुरुआत हुई इसका विचार प्रथम करें.

२. एक सज्जन, मानवतावादी, समाजवादी का खून होता है... तो यह समाज की अंतिम घडी है ऐसा निश्चय समझें. नरेन्द्र दाभोळकर नामक व्यक्ति की और मेरी मुलाकात १९९९ में पत्र द्वारा हुई. मैं चिंतन के क्षेत्र में नया था फिर भी उस महान व्यक्ति ने मुझे सहानुभूति पूर्ण उत्तर दिया. मैं आन्तर भारती औराद शहाजानी जिला लीातूर की उपक्रमशील संस्था में कार्यरत था - प्राचार्य सदाविजय आर्य सर ने मेरे पत्र पढे. नरेन्द्र दाभोळकर सर तो अजातशत्रु थे. प्रेमपूर्ण भाषा, उत्साही और अंधश्रद्धा निर्मूलन के लिए अपना सर्वस्व देनेवाले व्यक्तिमत्व.... महाराष्ट्र. सदा उन्हें याद करेगा. पर ऐसे मनोवृत्ती का क्या? यह अपने सामने प्रश्न है. मारनेवालों ने विचार करना चाहिए था. समाज के भले के लिए लड़नेवाले व्यक्ति को ऐसा न्याय दे रहे हैं. क्यों?

मित्रो !

एक बात तो पक्की है कि

अंधश्रद्धा निर्मूलन यह आंदोलन अब समाप्त हुआ. ऐसा व्यक्ति फिर मिलने के लिए समाज को खूब इन्तजार करना पड़ेगा.

साने गुरुजी की ''श्याम की आई'' पुस्तक घर घर पहुंचाने के लिए नरेंद्र दाभोळकर सर और प्राचार्य सदाविजय आर्य सर का बड़ा हाथ है.

नारायण भारती

निवधा बाजार, जि.नांदेड

(नोट : आंदोलन समाप्त नहीं होगा. कोई न कोई खिवैय्या मिलेगा ही, तुम, हम व अन्य कई सौ कार्यकर्त्ता हैं तो फिर निराशा क्यों! - मुख्य संपादक)

हिन्दी प्रस्तुति : डा.मधुश्री आर्य

समाचार-भारती १

कथाकथन प्रबोधन का सहस्रपूर्ती समारोह सम्पन्न

गत २१ जुलाई २०१३ के दिन पुणे में साने गुरुजी कथाकथन प्रबोधिनी द्वारा 'कथाकथन तंत्र-मंत्र' शिविर का 'सहस्र पूर्ती' समारोह 'महाराष्ट्र साहित्य परिषद के सभागृह में सम्पन्न हुआ.'

साने गुरुजी कथामाला, पुणे तथा कथाकथन प्रबोधिनी द्वारा आयोजित इस समारोह में - 'अखिल भारतीय साने गुरुजी कथामाला, मुंबई (मध्यवर्ती) के सभी कार्यकारिणी पदाधिकारी एवं सदस्य उपस्थित थे. साथ-साथ महाराष्ट्र में स्थित जिला स्तरतीय अध्यक्ष अधिकाधिक संख्या में उपस्थित थे. पुणे कथामाला के सभी पदाधिकारी एवं ४० कार्यकर्ता और तहसील नुसार कार्यकर्ताओं की उपस्थिती सराहनीय थी.'

समारोह-सभागृह के मंचपर श्री बालासाहेब पाटील, श्री जयवंतराव ठाकरे, श्री जयवंत मठकर ये मध्यवर्ती कथामाला के पदाधिकारी, श्री महादेव कोंढरे (उपसभापती, पंचायत समिती मुळशी) श्रीमती शुभांगी चव्हाण (उपशिक्षणाधिकारी शिक्षण मंडल, पुणे म.न.पा.) और कथा प्रबोधिनी के मानद संचालक - श्री श्यामराव कराळे विद्यमान थे.

साने गुरुजी कथाकथन प्रबोधिनी यह संस्था अखिल भारतीय साने गुरुजी मुंबई का एक उपांग है. उसकी स्थापना १९७७ में हुई है. शिवशाहीर बाबासाहब पुरंदरे, डॉ.अनिल गोडबोले, द्वारकानाथ लेले, ग.म.केलकर, डॉ.सुलभा शाह और मुकुंद तेलीचरी इन्होंने प्रबोधिनी की स्थापना कर पहला शिबिर भिवंडी में लिया. प्रबोधिनीकी सारी जिम्मेदारी साने गुरुजी कथामाला, पुणे पर सौंप दी है. तब से लेकर अबतक पूरे महाराष्ट्र भर में, गोवा-मध्यप्रदेश जैसे भारत के कुछ प्रदेशों में अध्यापक एवं कार्यकर्ताओं के लिए 'कथाकथन तंत्र-मंत्र पर एक हजार शिविरि सम्पन्न हुए हैं. आखरी एक हजारवाँ शिविर पुणे (सांगवी) के न्यु मिलेनियम स्कूल में लिया गया. यह बात हम सभी के लिए गौरवान्वित रूप में सिद्ध हुई है. अतः यह समारोह 'आनंद समारोह' का प्रतीक बन गया है.

प्रथमतः विद्यमान संचालक श्री श्यामराव कराळेजीने सभी का स्वागत कर प्रबोधिनी की पूर्ण रुपरेखा स्पष्ट की और मंच पर बैठे सभी अभिभावकों का 'सन्मानचिन्ह' देकर गौरव किया. बादमें महाराष्ट्र - गोवा से आये सभी निमंत्रित कार्यकर्ताओं का मेहमानों के हाथों 'सहस्रपूर्ती' मानचिह्न देकर उनका सत्कार किया. साथ-साथ श्री कराळेजीने देकर उनका सत्कार किया. साथ-साथ श्री कराळेजीने श्री बाबासाहब पुरंदरे, कै.ग.म.केलकर, द्वारकानाथ लेले, मुकुंद तेलीचरी, श्रीमती सुलभा शाह, सुश्री प्रिया पै, सुश्री उमा फडके, श्री अनिल गोडबोले, श्री दिलीप गरूड, इन पूर्व मानद संचालकों का भी गौरव किया.

इस कार्यक्रम में कथाकथन प्रबोधिनी के प्रथम मानद संचालक कै.ग.म.केलकर लिखित 'सुरस कथा' इस पुस्तक का विमोचन अध्यक्ष महोदय के हाथों सम्पन्न हुआ.

कार्यक्रम का सूत्र संचालन सुश्री निर्मला खिलारे और आभार प्रदर्शन सुश्री अपर्णा निरगुडे ने किया.

इस समारोह का आयोजन साने गुरुजी कथामाला, पुणे के अध्यक्ष श्री मनोहर घारे तथा कथाकथन प्रबोधिनी के विद्यमान मानद संचालक श्री श्यामरव कराळे और सभी कार्यकर्ताओं के सहयोग से सम्पन्न हुआ.

- चंद्रकांत इंदुरे

९८५०९७७७८९

समाचार भारती -२

आंतर भारती, गोवा युनिट के सुरज नाईकजी अध्यक्ष

आंतर भारती गोवा युनिट की हाल ही में बैठक हो गई है और उसमें नूतन कार्य समिती का गठन किया है.

गोवा राज्य संघटक और लेखक एन.सुहासजी की अध्यक्षता में संपन्न हुई ये बैठक प्रस्ताविक और स्वागत के बाद शुरु हुई.

१० मई २०१३ में गोवा में हुये दिनभर के कार्यक्रम का विवरण करके सभी ने चयन किया. और उसका खर्चे का विवरण भी सामने रखा. उसके बाद गोवा युनिट (आंतर भारती) का गठन किया जो निर्विरोध था.

भारतीय जीवन निगम के आर्थिक प्रबंधक सूरज नाईकजी को अध्यक्ष चुना गया और एन.सुहासजी को सचिव चुन लिया गया.

सहसचिव अरुण चव्हाण और कोषाध्यक्ष सदानंद खंडेकर चुने गये. सभासदों में दिव्यता खांडेकर, किरण प्रकाश नाईक, अंजली मापारी, सायना नाईक, समिरा फडते, अनिल गांवकर, एकनाथ नाईक, अमृत नाईक, अभिराज एम.नाईक, दीपक आरोलकर, शिरीश सदानंद नाईक, संतोष फडते, अनिता नाईक, रत्नदीप वरत, दिलीप नाईक, मंगलदास भट, आशिश करमली, मनोहर भंडारी, मोहन बोरकर, निखील नाईक, रुपेश नाईक, चैताली घाडी और अतुल शिरोडकर इनका सहभाग है.

अंत में अमृत नाईकजी ने आभार प्रकट किया.

'आंतर भारती' के गोवा संगठक एन.सुहास को उनकी कृति 'खेळांगण' के लिए भारतीय कला साहित्य संस्कृति अकादमी ने हाल ही वर्धा में पुरस्कृत एवं सम्मानित किया. सुहास जी को 'आंतर भारती' की बधाइयाँ.

समाचार भारती -३

गोइन्का पुरस्कार व सम्मान समारोह हैदराबाद में सम्पन्न

दिनांक ११ अगस्त के दिन हैदराबाद के एन.टी.आर कलामंदिरम् में कमला गोइन्का फाउण्डेशन द्वारा आयोजित वरिष्ठ तेलुगु भाषी हिन्दी साहित्यकारों एवं हिन्दी पत्रकारों के सम्मानार्थ समारोह में कमला गोइन्का फाउण्डेशन के प्रबंध न्यासी श्री श्यामसुन्दर गोइन्का ने पुरस्कृत साहित्यकारों और पत्रकारों के योगदान को सराहा व संस्था का परिचय दिया.

आंध्र प्रदेश के तेलुगु भाषी हिन्दी साहित्यकारों के लिए इक्कीस हजार रुपये का ''गीतादेवी गोइन्का हिन्दी तेलुगु अनुवाद पुरस्कार २०१३'' डॉ.जे.एल.रेड्डी को उनकी श्रेष्ठतम् कृति 'पुराण प्रलापम्' के लिए दिया गया.

आंध्र प्रदेश के वरिष्ठ हिन्दी साहित्यकरों के सम्मान में घोषित ''भाभीश्री रमादेवी गोइन्का हिन्दी साहित्य सम्मान २०१३'' से वरिष्ठ साहित्यकार श्री ऋषभदेव शर्मा को उनके साहित्यिक योगदान के लिए सम्मानित किया गया.

साथ ही आंध्र प्रदेश के हिन्दी पत्रकारिता जगत के वरिष्ठ पद्धकारों के सम्मनार्थ घोषित ''श्री मुनींद्र पत्रकारिता सम्मान'' से हैदराबाद से प्रकाशित प्रमुख हिन्दी दैनिक 'मिलाप' के कार्यकारी संपादक श्री रवि श्रीवास्तव जी को सम्मानित किया गया.

समारोह के मुख्य अतिथि ''भास्वर भारत मासिक पत्रिका'' के संपादक डॉ.राधेश्याम शुक्ल ने सम्मानमूर्ति साहित्यकारों का अभिनन्दन किया. विशेष अतिथि क्षेत्रीय ''निदेशक, केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, हैदराबाद'' के प्रो. हेमराज मीणा ने साहित्यिक गतिविधियों के लिए न्यास को बधाई दी. समारोह अध्यक्ष ''पूर्व अध्यक्ष, हिन्दी एवं भारत अध्ययन विभाग, अंग्रेजी एवं विदेशी विश्वविद्यालय, हैदराबाद'' डॉ.एम.वेंकटेश्वर ने कमला गोइन्का फाउन्डेशन द्वारा साहित्यकारों, पत्रकारों के सम्मनार्थ चलाये जा रहे इस मुहिम को व हिन्दी को व हिन्दी साहित्य के प्रति किये जा रहे कार्यों की भरपूर सराहना की और श्री गोइन्का जी बधाई दिये.

कार्यक्रम का संचालन श्रीमती ललिता गोइन्का ने किया. अंत में श्री ओमप्रकाश गोइन्का जी ने आभार व्यक्त किया. इस अवसर पर प्रादेशिक पुरस्कार समिति के सदसय डॉ.टी.मोहन सिंह, डॉ.बी.सत्यनारायण तथा डॉ.एम.रंगय्या सहित हैदराबाद के अनेक गणमान्य साहित्य-प्रेमी व्यक्ति मौजूद थे.

कमलेश यादव,

कार्यकारी सचिव, कमला फाउण्डेशन, बैंगलोर मो.०९६२०२०७९७६

समाचार भारती -४

साहस शैक्षणिक यात्रा का आयोजन सम्पन्न

अतिथि डॉ.वर्मा दम्पत्ति

आन्तर भारती बिरादरी इन्दौर द्वारा हिमाचल प्रदेश की राजधानी शिमला देवभूमि दिनांक ६ मई से १६ मई, १३ तक साहस / शैक्षणिक यात्रा आयोजित की गई. शिमला के सर्वोदय बालाश्रम, दुर्गापुर के कस्तुरबा बालिका छात्रावास, राजकीय प्राथमिक पाठशाला, नालदेहरा एवं राजकीय माध्यमिक पाठशाला मशोबरा, जिला शिमला संस्थानों से सम्पर्क कर शिक्षक वर्ग एवं बच्चों से मुलाकत की अपने प्रदेश व देश के विभिन्न प्रान्तों में किये जा रहे कार्यक्रमों की जानकारी के साथ ही साथ आन्तर भारती क्या है ? इसके उद्देश्य एवं कार्यक्रमों के बारे में विस्तार पूर्वक जानकारी के साथ ही साथ आन्तर भारती क्या है ? इसके उद्देश्य एवं कार्यक्रमें के बारे में विस्तार पूर्वक जानकारी प्रबन्ध न्यासी प्रतापसिंह डांगी ने दी. भी राजस्थान की संस्कृति एवं जीवन शैली के बारें में बताया. सभी संस्थानों पर बच्चों को देशभक्ति गीत, नारे तथा खेल प्रतियोगिताएँ आयोजित की. बच्चों ने भी स्थानीय लोक गीतों के माध्यम से मनोहारी प्रस्तुति दी, अपार उत्साह के साथ बढ चढकर भागीदारी निभाई व नगद पुरस्कार, प्रमाण पत्र आदि प्राप्त किये. प्रति वर्षानुसार असहाय आश्रमों को खेल के साधन, स्टेशनरी

सामग्री, दवाइयां, टाफीज, लेखन सामग्री, सहयोग स्वरूप प्रदान की गई. आर्थिक सहायता भी दी जानकर गौरव का अनुभव होता है.

औंकारेश्वर के संत श्री संजयानन्द जी ने भी उदबोधन व आशीर्वाद प्रदान किया. इस अवसर पर कस्तूरबा गांधी राष्ट्रीय निधि (हिमाचल शाखा) शिमला की प्रतिनिधि डॉ.प्रेमलता गांधी (वर्मा) एवं सर्वोदय बालाश्रम के कार्यालयीन सचिव श्री हरिसिंह वर्मा ने सक्रिय भागीदारी की. उन्ही के मार्गदर्शन के फलस्वरूप ही सभा संस्थान प्रमुख ने जिनमें सर्व श्री श्रीमती शांती चौहान (प्राचार्य, मशोवरा) श्री पद्म चौहान (नालदेहरा) सु.श्री निर्मला कुमारी (संचालिका, दुर्गापुर एवं श्री संजय कपूर (सामाजिक कार्यकर्ता) मशोवरा तथा सु.श्री संयोगिता (वार्डन) श्रीमती कांता, सु.श्री शालू बालाश्रम शिमला, शिक्षक वर्ग ने बड़ी ही आत्मीय भाव से आ.भा.बिरादरी इन्दौर के दल का स्वागत व आतिथ्य सत्कार किया तथा प्रतिवर्ष इस प्रकार के आयोजन करने हेतु सहमति जताई. इस अवसर पर प्रकाश कुशवाह १४ वर्ष ने भी भागीदारी की. स्थानीय सहभागी २६८ बच्चे व ४७ शिक्षक / सामाजिक कार्यकर्ता रहे.

मौसम बहुत ही खुशनुमा रहा २ दिन खूब पानी भी बरसा / ठंडक बढ़ गई पर सभी सहभागी अपने को भाग्यशाली मान कर मौसम का आनन्द लिया. पर्वतों की रानी शिमला के दर्शन १४ व ८४ वर्ष के सहभागी अति उत्साहित लगें चंडीगढ के रॉक गार्डन, रोज गार्डन, सुखना झील, शास्त्री मार्केट (सेक्टर २२) पिंजोर गार्डन (कालको) जाखू, कुफरी, चाइल, गोल्फ केन्द्र, नाल देहरा, दुर्गापुर, लोबर बाजार, तवा पानी ऊँचे ऊँचे देवदार के वृक्ष, कालका देवी मंदिर इत्यादि एक से एक स्थल देखकर अपार प्रसन्नता का अनुभव किया. वह स्थल समुद्र सतह से ७,२०० फीट की ऊँचाई पर स्थित है. ऊँची-नीची बल खाती सड़कें उबड़ - खाबड़ ग्राम देखने व भ्रमण करने का अवसर दल को मिला प्रतिवर्षानुसार आवास व भोजन की व्यवस्था आ.भा.बिरादार की न्यासी डॉ.प्रेमलता वर्मा ने उपलब्ध करवाई. प्रतिवर्ष इस प्रकार का आयोजन उन्ही के विशेष आग्रह के फलस्वरूप किया जाता है. स्थानीय व्यक्तियों व सामाजिक कार्यकर्ताओं व बच्चों की भागीदारी के फलस्वरुप हम काफी कुछ सीख व साहस प्राप्त कर ज्ञानर्जन व स्वास्थ लाभ प्राप्त कर पुनः अपने प्रदेश व नगर को लौटे. देवभूमि नाम सार्थक ही लगता है.

- प्रतापसिंह डांगी
प्रबंधन्यासी

राष्ट्रीय युवा योजना द्वारा आयोजित

आंतर भारती राष्ट्रीय बाल आनंद महोत्सव

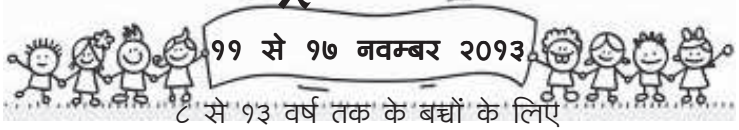

८ से १३ वर्ष तक के बच्चों के लिए

अपनी प्रतिभा को विकसित करने का मुक्त अवसर

परिवार निवास

वर्धा (महाराष्ट्र में)

पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण से रेल द्वारा पहुंचा जा सकता है

संपर्क

आशीष गोस्वामी (वर्धा) ०९४२२१४१२६२

राष्ट्रीय युवा योजना नई दिल्ली ०९८१०३५०४०४

नरेंद्र वडगावकर ०९८२५२७८४१२

स्थानीय स्तर पर

साक्री तालुका शिक्षण संस्था अंतर्गत

२९, ३०, ३१ अक्टूबर २०१३ में

आंतर भारती बाल आनंद महोत्सव

संपर्क

जे.यू.नाना ठाकरे मो.०९४२३१९१९११

अब अपनी रचनाएँ इस पते पर भेजें

डा.सी.जयशंकर बाबु

सहायक प्रोफेसर, हिन्दी विभाग पांडीच्चेरी विश्वविद्यालय, कालापेठ, पुद्दुच्चेरी - ६०५०१४

चलध्वनि संपर्क : ०९८४३५०८५०६

ईमेल-editorbabuji@gmail.com / वेबसाईट-www.yugmanas.blogspot.com